Poonam Shodh Rachna (ISSN 2456-5563)
(A multidisciplinary, peer reviewed and refereed Research Journal)
Vol. 2, Issue.8, Aug 2023, PSR-2308001

रीवा संभाग के ग्रामीण अंचल में संचालित शासकीय महाविद्यालयों के पुस्तकालय व्यवस्था तथा उसके संचालन की गुणवत्ता का एक समीक्षात्मक अध्ययन

शोधार्थी
दीपिका त्रिपाठी
(एम.लिब, एम.फिल, पुस्तकालय विज्ञान)

शोध निर्देशक
डॉ. डी.वी. सिंह (असि. प्रो. पुस्तकालय विज्ञान
स्वामी विवेकानंद युनिवर्सिटी सागर)

प्रस्तावना :–

हमारे देश के स्वतंत्रता प्राप्ति के समय तत्कालीन विंध्य प्रदेश में मात्र एक महाविद्यालय संचालित था। सन् 1956 में नवीन मध्य प्रदेश के गठन के समय उस समय के रीवा संभाग में पॉच महाविद्यालय संचालित थे जिनमें छात्र/छात्राओं की संख्या अत्यन्त सीमित थी तथा विद्यार्थियों के संख्या के परिपेक्ष्य में महाविद्यालयों में प्रयोगशालाओं पुस्तकालयों तथा अन्य सहायक शैक्षिक गतिविधियों के लिए संसाधन पर्याप्त संख्या में उपलब्ध थे। निचले स्तर से शिक्षा के प्रचार प्रसार के फलस्वरूप धीरे–धीरे महाविद्यालय में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या में आसातीत वृद्धि हुई। इस कारण दो प्रकार की स्थितियाँ निर्मित हुई, पहली – महाविद्यालयों में प्रत्येक पक्ष की गुणवत्ता में कमी तथा दूसरी – अधिक से अधिक महाविद्यलयों के स्थापना की आवश्यकता। इस कारण जिला मुख्यालय के अतिरिक्त लगभग सभी विकाशखण्ड मुख्यालयों तथा अन्य ग्रामीण अंचलों में भी शासकीय महाविद्यालयों की स्थापना करने के लिए शासन ने प्रयास किये। आज रीवा संभाग के शहरी क्षेत्र के अतिरिक्त बहुत अधिक ग्रामीण क्षेत्रों में महाविद्यालय संचालित किये जा रहे हैं।

उद्देश्य :–

1. रीवा सम्भाग के ग्रामीण अंचलों में संचालित शासकीय महाविद्यालयों के पुस्तकालयों की वास्तविक स्थिति का पता लगाना।
2. इन पुस्तकालयों की गुणवत्ता तथा कार्यशैली को प्रभावी बनाने के लिए सुझाव देना।

परिकल्पना :–

1. रीवा सम्भाग के ग्रामीण अंचलों के महाविद्यालयों में संचालित पुस्तकालयों की गुणवत्ता मानव स्तर की तुलना में बहुत कम है।

2. इस क्षेत्र में संचालित इन महाविद्यालयों के पुस्तकालयों में शासन तथा स्थानीय प्रशासन के द्वारा गुणवत्ता बढ़ाने की दिशा बहुत अधिक सार्थक प्रयासों की आवश्यकता है।

ग्रामीणांचल के महाविद्यालयों में पुस्तकालीन स्थिति का समीक्षात्मक आकलन :–

वर्तमान में रीवा संभाग के प्रत्येक जिले में ग्रामीणांचलों में पर्याप्त संख्या में महाविद्यालयों का संचालन हो रहा है। इन महाविद्यालयों में मानवीय एवं भौतिक संसाधनों की उपलब्धता सामान्य से कम अर्थात असंतोष जनक स्थिति में है। इन क्षेत्रों में स्थित महाविद्यालयों में पुस्तकालय व्यवस्था चिंतनीय स्थिति में है। इसके लिए शोधार्थी ने अपने कई निरीक्षण बिन्दु संकलित किये हैं जिसकी चर्चा निम्नानुसार है:–

1. **शासकीय महाविद्यालयों के भवन का सुविधायुक्त न होना** :– अधिकांश महाविद्यालयों के पास अपने स्वतः के भवन उपलब्ध नहीं हैं इस कारण इनका संचालन नियमानुकूल व व्यवस्थित रूप से नहीं हो पाता। भवन के आभाव के कारण पुस्तकालय कक्ष की कप्लना संभव नहीं ळें

तालिका – 1

रीवा संभाग के ग्रामीणांचलों में संचालित शासकीय महाविद्यालयों के भवन की वास्तविक स्थिति :–

क्रमांक	भवन की वास्तविक स्थिति	संख्या	प्रतिशत
01	भवन विहीन	14	19.44
02	सुविधा विहीन	31	43.05
03	सुविधायुक्त किन्तु अपर्याप्त कक्ष	12	16.66
04	पर्याप्त सुविधायुक्त	15	20.83

2. **महाविद्यालयों में पुस्तकालय अध्यक्ष के पद का ना तो सृजन न होना अथवा सृजन होने पर भी पुस्तकालय अध्यक्ष का पदांकन न होना :–**

हमारे रीवा संभाग के लगभग 80 से 85 प्रतिशत महाविद्यालयों में पुस्तकालय अध्यक्ष की स्थापना ही नहीं है, जहाँ पर कहीं भी पुस्तकालय अध्यक्ष कार्य कर रहे हैं वे या तो संविदा अतिथि के रूप में पद स्थापित हैं जिनका कोई निश्चित सेवा दशाएं नहीं हैं।

तालिका – 2

ग्रामीणांचल के महाविद्यालयों में संचालित पुस्तकालयों में पुस्तकालय अध्यक्ष के पद के सृजन/पदस्थापना की स्थिति :–

क्रमांक	स्थिति	संख्या	प्रतिशत
01	पुस्तकालय अध्यक्ष का पद सृजित नहीं	0	0
02	पुस्तकालय अध्यक्ष का पद सृजित किन्तु रिक्त	40	55.55
03	पुस्तकालय अध्यक्ष का पद सृजित तथा भरा हुआ	32	44.44

3. **महाविद्यालयों में पुस्तकालय हेतु संसाधनों का आभाव :–** किसी भी शिक्षण संस्थान की शैक्षिक आत्मा उसके पुस्ताकलय होते हैं। शिक्षक एवं विद्यार्थियों को इन्हीं के माध्यम से विषय वस्तु, शैक्षिक समस्या के निराकरण का ज्ञान, नवाचार, नवीन शैक्षिक पद्धतियां तथा शोध करने के लिये साहित्य पुस्तकालय से ही सुलभ होता है। ऐसी स्थिति में यदि व्यवस्थित पुस्तकालय नहीं है तो शिक्षा की गुणवत्ता किस प्रकार से सुनिश्चित की जायेगी।

तालिका – 3

इन महाविद्यालयों में संचालित पुस्तकालयों की वर्तमान व भौतिक स्थिति :–

क्रमांक	भौतिक स्थिति का स्वराय	संख्या	प्रतिशत
01	स्तरहीन	20	27.77
02	सामान्य	37	51.38
03	अच्छा	15	20.83

4. **पुस्तकालय हेतु पर्याप्त अनुदान का शासन से प्राप्त ना होना :–** रीवा संभाग के लगभग सभी महाविद्यालयों में संचालित पुस्तकालयों में पुस्तकों, साहित्य, शोध पत्र, मैगजीन तथा समाचार पत्रों के क्रय के लिए उपयुक्त राशि नहीं मिल पा रही है। ऐसी स्थिति में पुराने पुस्तकालयों में नवीन पुस्तकों की अपर्याप्त उपलब्धता तथा नये सृजित महाविद्यालयों में इस संबंधित पुस्तक वा साहित्यों की सुलभता सुनिश्चित नहीं हो रही है।

तालिका – 4

विगत 05 वर्षों में रीवा संभाग के शासकीय महाविद्यालयों में संचालित पुस्तकालयों को प्राप्त हुई अनुदान राशि :–

क्रमांक	प्राप्त राशि	संख्या	प्रतिशत
01	अपर्याप्त	14	19.44
02	सामान्य	31	43.05
03	सन्तोषजनक	12	16.66
04	पर्याप्त	15	20.83

5. **ग्रामीणांचल में स्थिति महाविद्यालयों के पुस्तकालयों में आकर्षण न होने के कारण पुस्तकालय के उपयोग की उदासीनता** :– शोधार्थी स्वयं रीवा संभाग के ग्रामीणांचल में स्थित नवीन स्थापित शासकीय महाविद्यालय में पुस्तकालय अध्यक्ष का कार्य कर रही है। इस संदर्भ में उसे जो अनुभव हुआ है उसके अनुसार यह सत्य है कि इन महाविद्यालयों में यदि कोई ग्रंथालय स्थापित है तो वह सुविधा विहीन होने के कारण आकर्षक नहीं है, जैसे उपयुक्त पुस्तकालय कक्ष का आभाव, पुस्तकों के रखरखाव के लिए व्यवस्थित आलमारियों का आभाव, पुस्तकालयों में बैठक व्यवस्था का आभाव तथा पुस्तकालय में ई–लाइब्रेरी सुविधा का आभाव, न तो वहाँ के शिक्षकों तथा न ही विद्यार्थियों को पठन–पाठन के लिए पुस्तकालय में आकर्षित नहीं करते। इसलिए यहाँ पुस्तकालय मात्र प्रतीक चिन्ह बनकर रह गये हैं।

तालिका – 5

महाविद्यालयों में स्थित पुस्तकालयों में उपलब्ध सुविधा तथा ई–पुस्तकालय के संकल्पना की प्रतिपूर्ति की वास्तविक स्थिति :–

क्रमांक	सुविधा तथा तकनीकी संसाधन	संख्या	प्रतिशत
01	सुविधा तथा तकनीकी संसाधन विहीन	27	37.5
02	सुविधायुक्त किन्तु तकनीकी संसाधन विहीन	25	34.72
03	सुविधायुक्त तथा तकनीकी संसाधन युक्त	20	27.77

सुझाव :–

1) शासन के द्वारा स्थापित किसी भी शैक्षिक संस्थान में एक निर्धारित मापदण्ड के अनुसार समस्त भौतिक सुविधाएँ व संसाधन उपलब्ध कराये जाने चाहिए अन्यथा ऐसे शैक्षिक संस्थानों का जो संसाधन विहीन है उनके खोलने का कोई विशेष लाभ मिल पाना संभव नहीं है।

2) किसी भी शैक्षिक संस्थान की पुस्तकालय शैक्षिक आत्मा है। इसलिए संस्थानों में पुस्तकालयों का सर्वसुविधा सम्पन्न होना आवश्यक है। इस दिशा में शासन को पूरा प्रयास करना चाहिए।

3) प्रत्येक महाविद्यालयों में वर्तमान में ई–पुस्तकालयों की स्थापना पर विशेष बल दिया जा रहा है अतः पुस्तकालय तकनीकी संसाधनों से युक्त होने चाहिए।

4) किसी भी पुस्तकालय के रखरखाव के लिए पुस्तकालय अध्यक्ष की आवश्यकता होती है इसलिए प्रत्येक संस्थान में उत्तम शैक्षिक गुणवत्तायुक्त एवं प्रशिक्षित पुस्तकालय अध्यक्ष की स्थापना आवश्यक है।

सन्दर्भः–

1) Ali, P.M., & Nisha, F. (2011) use of e-journals central science library Delhi.
2) Bansode, S.Y. & Pujar S.M. (2008) use of Internet by research scholars at Shivaji University, Kolhapur.
3) Pandey R. (2013), Dictionary of library and Information science, New Delhi.

About the news papers.